व्याख्या

व्याख्या न ही भावार्थ है और न ही आशय। इन दोनों से भिन्न है। उसके नियम भी अलग है। व्याख्या किसी भाव या विचार का विस्तार या विवेचन है। इसमें परीक्षार्थी को अपने अध्ययन, मनन और चिन्तन के प्रदर्शन की पूरी आजादी रहती है।

व्याख्या के प्रकार :- प्रसंगनिर्देश व्याख्या का अनिवार्य अंग है। इसलिए, व्याख्या लिखने के पूर्व प्रसंग का उल्लेख पहले देना चाहिए; पर प्रसंगनिर्देश संक्षिप्त होना चाहिए। परीक्षा भवन में व्याख्या लिखते समय परीक्षार्थी प्रायः दो-दो, तीन-तीन पृष्ठों में प्रसंगनिर्देश करते और कभी-कभी मूलभाव से दूर जाकर लम्बी-लम्बी चौड़ी भूमिका बाँधने लगते हैं। यह उचित नहीं। उत्तम कोटि की व्याख्या में प्रसंगनिर्देश संक्षिप्त होता है।

अतः परीक्षार्थी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि व्याख्या में कोई बात फिजूल और बेकार न हो। प्रसंगनिर्देश विषय के अनुकूल होना चाहिए।

व्याख्या में मूल के भावों और विचारों का समुचित और संतुलित विवेचना होना चाहिए। यहाँ परीक्षार्थी को अपनी स्वतंत्र बुद्धि और विवेक से काम लेने का पूरा अधिकार है। विषय के विवेचन में विचारों के सत्यासत्य का निर्णय किया जाता है। इसलिए विचारों का विवेचन व्यक्त करते समय छात्र को विषय के गुण व दोष, दोनों की समीक्षा

करनी चाहिए। उनकी व्याख्या में विचारों या भावों का संतुलित विवेचन अपेक्षित है। अगर विचारों से सहमत हैं तो तर्कसंगत पुष्टि करनी चाहिए और असहमत हैं तो उसका खण्डन भी।

व्याख्या में खण्डन - मण्डन करने से पहले मूल के भावों का सामान्य अर्थ ~~लिखें~~ या भावार्थ लिख देना चाहिए, ताकि परीक्षक यह जान सके कि छात्र ने उसका सामान्य अर्थ भली - भाँति समझ लिया है। व्याख्या में भावार्थ अथवा आशय का इतना ही काम है। भावार्थ के बाद विषय का विवेचन होना चाहिए।

सम्यक विवेचन के बाद अंत में ~~कठिन शब्द भावों का विस्तार होना चाहिए~~ कठिन शब्दों का अर्थ, टिप्पणी के रूप में देना चाहिए। इस तरह व्याख्या समाप्त होती है।

व्याख्या के लिए आवश्यक निर्देश! - मूल अवतरण की अपेक्षा व्याख्या बड़ी होती है। इसकी लम्बाई - चौड़ाई के सम्बंध में कोई निश्चित सलाह नहीं दी जा सकती। छात्रों से सिर्फ यह देखना है कि मूल भावों अथवा विचारों का समुचित और संतोषजनक विवेचन हुआ या नहीं। इन बातों को ध्यान में रखकर अच्छी और उत्तम व्याख्या लिखी जा सकती है। इसके साथ ही निम्न बिन्दुओं को स्मरण रखना चाहिए —

1. व्याख्या में प्रसंगनिर्देश अत्यावश्यक है।
2. प्रसंगनिर्देश संक्षिप्त, आकर्षक और संगत होना चाहिए।
3. व्याख्या में मूल विचार या भाव का संतुलित विवेचन होना चाहिए।

Page No.:
Date: / /

(4) मूल के विचारों का खण्डन या मण्डन किया जा सकता है।
(5) मूल के विचारों के गुण - दोषों पर समानरूप से प्रकाश डालना चाहिए।
(6) यदि कोई महत्त्वपूर्ण बात हो, तो उसपर अंत में टिप्पणी दे देनी चाहिए।

Scanned with CamScanner